Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 10 ~ Issue 7 (2022) pp: 238-240
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

भीष्म साहनी के उपन्यासों का सृजनशील यथार्थ

डॉ. सुधा पोद्दार (जाजोदिया)

सहायक आचार्य

श्री रघुनाथ बालिका पी. जी. महाविद्यालय, लक्ष्मणगढ़ (सीकर)

संक्षेप

हिन्दी साहित्य के वरिष्ठ कथाकार भीष्म सहनी के औपन्यासिक संसार में भारतीय जनता की आजादी के यथार्थवादी तर्क का निर्माण हुआ है। उनकी रचना का यर्थाथवाद एक ओर तो सामाजिक जीवन की वास्तविकताओं को प्रभावशाली रूप प्रदान करता है, दूसरी ओर चेतना का संस्कार देता है। इनके कथा यथार्थ में वस्तुओं, घटनाओं और पात्रों के आंतरिक संबंधो का निर्वाह हो सका है। साहनी का यथार्थवाद प्रेमचंद की परंपरा का होते हुए भी उनसे बहुत आगे है वे एक ओर आधुनिकता बोध की विसंगति और परायपन के खिलाफ हैं तो दूसरी ओर रूढ़ियों, अंधविश्वासों वाली धार्मिक कुरीतियों के विरूद्ध हैं।

साहित्य विधाओं की दृष्टि से आधुनिक युग कथा साहित्य का युग है। मानव जीवन के विभिन्न व्यापार सुख–दुख, आशा – निराशा, पीड़ा–अवसाद यहाँ तक की मनुष्य के जन्म से मृत्युपर्यन्त के धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक संघर्ष उपन्यास में गुंफित होते हैं। हिन्दी कथा साहिम्य के साठोत्तर वर्षों में जिन उपन्यासकारों ने जीवन के यथार्थ स्वरूप को परिभाषित किया, नये पुराने मुल्यों के टकराव से उत्पन्न पीड़ा से संसिक्त आधुनिक बोध को प्रस्तुत किया, उनमें भीष्म साहनी का नाम विशेषोल्लेख्य है। संवेदना और धारणा के धरातल पर उनके उपन्यास सशक्त और आधुनिक है। उनका उपन्यास साहित्य समकालीन जीवन बोध के परिदृश्यों को उभारता हुआ अंततः मानव के राग संबंधों की कहानीनुमा तस्वीर है। यथार्थ की जो निर्मम वास्तविकताएँ समकालीन जीवन में प्रवेश करती हुई समग्र मानव संबंधो को खोखला बना रही है, उनका साक्षात्कृत संदर्भ इनमें मिलता है। आधुनिक बोध की भूमिका पर लिखे गए सृजनशील यथार्थ से युक्त उनके उपन्यासों में जीवंत तत्वों का समावेश है।

साहनी कथा–रचना के अन्तःकरण में द्वन्द्वात्मक संघर्ष व्याप्त है जो संवेदना और संस्कार के टकरावों से चरित्र को बदलता, वस्तु को आगे बढ़ाता तथा उद्देश्य को निर्धारित और निश्चित करता है। उन्होनें अपने कथा–साहित्य में मानव–नियति को बनाने वाले आधारों की परीक्षा की है। इसीलिए यह मनुष्य की अस्वीकृति और अनुपस्थिति के विरोध में पैदा होने वाले यथार्थवाद है। सामाजिक यथार्थ के जीवंत व्याख्याकार साहनी का लेखन मनुष्य के संघर्ष को सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक भूमिका में आगे बढ़ाता है। हर पात्र अपनी संवेदना के तहत अपने आरोपित संस्कार से लड़ता–सा नजर आता है और उसकी लड़ाई में समूचा परिवेश सम्बद्ध हो जाता है। वह अपने वर्तमान के लिए अपनी परम्पराओं से लड़ता नजर आता है, अपने भौतिक वातावरण के तहत अपने चिरपरिचित धार्मिक, नैतिक प्रतिभावों और मूल्यों से लड़ता नजर आता है। साहनी ने इसी संघर्ष को गति दी है और धर्मनिरपेक्ष मानव की रचना को संभव बनाया है।

यथार्थ की यह विशेषता है कि वह कलाकार की कला को नए आयाम देती है। यही वह मार्ग है जहाँ उसे रचनात्मकता का सुख प्राप्त होता है। प्रगतिवादी युग में बहुत से रचनाकारों ने यथार्थ के नाम पर कई लम्बी रचनाएँ लिखी, पर वे यथार्थवादी रचनाएँ न बनकर यथातथ्यता के अधिक निकट पहुँच गई। जो कुछ हम देख रहे है, उसका यथातथ्य वर्णन ही यर्थाथ नहीं है। वस्तुतः यर्थाथवाद एक गहरी सौन्दर्यमूलक, संवेदनात्मक एवं ऐतिहासिक दृष्टि होती है, जो एक ओर रचनात्मक स्तर पर अपने इतिहास को मनुष्यता के इतिहास से जोड़ती है और दूसरी ओर समसामयिक समाज की आशा–आकांक्षाओं, दुःख–पीड़ा, अभाव, अंतर्विरोध, जिजीविषा एवं संघर्षों तथा उसकी जीत एवं पराजयों के चित्रण में भी परिवर्तन को प्रगतिशील शक्तियों का अन्वेषण करती है और उनको बल प्रदान करती है। साहनी की औपन्यासिक रचनाओं में हमें यही यर्थाथता दृष्टिगोचर होती है। इस प्रकार जीवन की सच्चाइयों को ठोस आकृति में बांधने के अपने प्रयास में वे सफल रहे हैं।

''कडियाँ'' उपन्यास में मध्यवर्गीय संस्कार और संवेदन का संघर्ष है, जो महेन्द्र के जीवन को बदल देता है। मध्यवर्ग का चित्रण करते हुए भी उनकी दृष्टि कहीं भी मध्यवर्गीय सीमाओं की शिकार नहीं होती। इसके विपरीत वे मध्यवर्गीय पाखण्ड, कायरता और निष्क्रिय स्वप्नशीलता की बड़ी बेरहमी के साथ अत्यन्त पैनी आलोचना करते हैं। इससे उनके यर्थाथवादी विश्व दृष्टिकोण की प्रगतिशीलता सिद्ध होती है। साहनी नगर के मध्यवर्गीय जीवन के विश्लेषक है।

*Corresponding Author: डॉ. सुधा पोद्दार (जाजोदिया)

आधुनिक रचनाकार साहनी के यथार्थवाद में सामाजिक मनुष्य के नैतिक, सांस्कृतिक आधारों का उसके सम–सामयिक भौतिक परिवेश से द्वन्द्वपूर्ण संबंध है। उसमें बदलते हुए जीवन के अनुकूल बनने की तथा उसमें सक्रिय रहने की ग्रहणशीलता और विचारशीलता है। यह आधुनिकता बोध की दृष्टि ही है जो उनकी औपन्यासिक कथाओं के अंग–अंग को जागृत किये रहती है तथा उन्हें चुस्त बनाये रखती है। वह सम–सामयिक प्रांसगिकताओं को क्षीण नहीं होने देती। उनकी रचना की रग–रग में जीवन गूथाँ हुआ है। साहनी का साहित्य क्रांतिधर्मी मानव–संवेदन की ऊँचाइयों तक पहुँचा हुआ है। उसके राजनीतिक पहलू प्रखर और स्पष्ट है, वे सकारात्मक प्रभाव पैदा करने वाले है।

स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी उपन्यासों में जो आधुनिक बोध चित्रित, सांकेतिक और विश्लेषित हुआ है, उसमें मानव–मानव के संबंध, महानगरीय परिवेश और इनके साथ टूटते–बिगड़ते एवं बिखरते मानव का बिम्ब सार्वाधिक प्रभावी है। भीष्म साहनी के प्रगतिशील संदर्भ जीवंत हैं, वे समकालीन आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले है। आज पूरे देश में धर्म और जाति के नाम पर हिंसा भड़काने का दुष्चक्र चलाया जा रहा है, ऐसी हालत में भीष्म जी का उपन्यास–साहित्य बहुत उपयोगी हो जाता है।

संदर्भ :

1. डॉ. रणवीर सिंह – हिन्दी उपन्यास के मानववाद
2. डॉ. विवेकीराय – हिन्दी उपन्यास : उत्तरशती की उपलब्धियाँ
3. डॉ. मक्खन लाल वर्मा– हिन्दी उपन्यास : सिद्धान्त और समीक्षा
4. डॉ. त्रिभुवन सिंह : हिन्दी उपन्यास और यर्थाथवाद
5. डॉ. पुरूषोत्तम दूबे : व्यक्ति चेतना और स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास
6. निर्मला जैन, नित्यानंद तिवाड़ी (संपादक) – हिन्दी उपन्यास 1950 के बाद

*Corresponding Author: डॉ. सुधा पोद्दार (जाजोदिया)